SMT. GITA RAY BARMAN

Smt. Gita Ray Barman is an eminent Bhawaiya singer; composer and lyricist.Bhawaiya is a musical form or a popular music that originated in North Bengal, especially in the Coochbehar, Alipurduar, Jalpaiguri districts of West Bengal and the undivided Gowalpara district of Assam and the Rangpur division in Bangladesh.

2. Born on 15th February, 1976 in Sarbeswar Joyduar (a remote village in Coochbehar District of West Bengal), Smt. Barman passed B.A. with honours in History from Coochbehar College under Netaji Subhash University in 2008. From her early childhood she was attracted to Bhawaiya. Her first Guru was Shri Dinabandhu Sarkar. Later, she learned from Late Shri Nibaron Ray and Late Shri Sunil Chandra Ray.

3. Bhawaiya has a recurrent themes of the working class—Mahouth, Mahisals (Buffalo herders), gariyals (Cart Drivers). Lyrics express pains of separation and loneliness of their women folk and vice versa. Bhawaiya song also include spiritual, manoshiksha and dehototvo in theme. There are two types of Bhawaiya- one uses melancholic notes which is called “Dariya” and other uses skiping tone or ”Chatka”. Dotora, Sarinja, Bena, Flute, Deshidhol and Srikhol are usually played in Bhawaiya as musical instruments. Bhawaiya has a typical tonal structure.

4. Smt. Barman started singing Bhawaiya song as a child artist in All India Radio, Siliguri in “Sishumahal” programme. Afterwards, she performed in “Juba Bani” programme. Since 1992, she has been singing Bhawaiya in All India Radio, Siliguri as an “A- grade” Artist. She achieved 2nd position in Rajya Bhawaiya Competition in 1997, a state level competition organized by West Bengal Government and the next year in 1998 she achieved the 1st position in Rajya Bhawaiya competition. She passed the “Mukutmani” the highest educational degree of Bhawaiya Sangeet in 1994 from Uttarbango Kendriya Bhawaiya Sangeet Parishad.

5. Smt. Barman has composed and recorded numerous Bhawaiya songs. A music school named “Baniya Bandhu Bhawaiya Sangitalay” is running under her supervision where she teaches Bhawaiya songs and Nritya to her disciples. Around 30 students are learning Bhawaiya from her now. Her acting in the Ranjbanshi Films “Bihan” and “Ek fota Pani” has been praised by all and both films have been awarded.Besides singing she is involved in various charitable works, especially in the Tea garden area of North Bengal in collaboration with Azad Hind Sangha, Mathabhanga, Coochbehar.

श्रीमती गीता रॉय बर्मन

श्रीमती गीता रॉय बर्मन एक प्रख्यात भवैया गायिका, संगीतकार और गीतकार हैं। भवैया, संगीत की एक शैली और लोकप्रिय संगीत है जिसकी उत्पत्ति उत्तरी बंगाल, विशेष रूप से पश्चिम बंगाल के कूचबिहार, अलीपुरद्वार, जलपाईगुड़ी जिलों और असम के अविभाजित गोवालपाड़ा जिले और बांग्लादेश के रंगपुर डिवीजन में हुई।

2. 15 फरवरी, 1976 को सरबेश्वर जॉयदुआर (पश्चिम बंगाल के कूचबिहार जिले का एक सुदूर गाँव) में जन्मी, श्रीमती बर्मन ने 2008 में नेताजी सुभाष विश्वविद्यालय के अधीन कूचबिहार कॉलेज से इतिहास में बी.ए. (ऑनर्स) किया। बचपन से ही वह भवैया के प्रति आकर्षित थीं। उनके पहले गुरु श्री दीनबंधु सरकार थे। बाद में, उन्होंने स्वर्गीय श्री निबरोन रे और स्वर्गीय श्री सुनील चन्द्र रे से सीखा।

3. भवैया में श्रमिक वर्ग यानी महावत, महिसाल (भैंस चराने वाले), गरियाल (ठेलागाड़ी चलाने वाले) से जुड़े विषय होते हैं। गीतों में उनके परिवार के पुरुषों और महिलाओं के विरह और अकेलेपन की पीड़ा व्यक्त की जाती है। भवैया गीत की विषयवस्तु में आध्यात्मिकता, मनोशिक्षा एवं देहोतत्व भी शामिल है। भवैया दो प्रकार का होता है–एक में उदास स्वर होता है जिसे "दरिया" कहा जाता है और दूसरा लंघन स्वर या "चटका" होता है। भवैया में आमतौर पर डोटोरा, सरिंजा, बेना, बांसुरी, देशीढोल और श्रीखोल वाद्ययंत्र बजाए जाते हैं। भवैया में एक विशिष्ट तानयुक्त संरचना होती है।

4. श्रीमती बर्मन ने ऑल इंडिया रेडियो, सिलीगुड़ी में "शिशुमहल" कार्यक्रम में एक बाल कलाकार के रूप में भवैया गीत गाना शुरू किया। तत्पश्चात, उन्होंने "जुबा बानी" कार्यक्रम में प्रस्तुति दी। 1992 से, वह ऑल इंडिया रेडियो, सिलीगुड़ी में "ए–ग्रेड" कलाकार के रूप में भवैया गा रही हैं। उन्होंने 1997 में पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय प्रतियोगिता, राज्य भवैया प्रतियोगिता में दूसरा स्थान हासिल किया और अगले वर्ष 1998 में उन्होंने राज्य भवैया प्रतियोगिता में पहला स्थान प्राप्त किया। उन्होंने 1994 में उत्तरबंगो केंद्रीय भवैया संगीत परिषद से भवैया संगीत की सर्वोच्च शैक्षिक डिग्री "मुकुटमणि" प्राप्त की।

5. श्रीमती बर्मन ने कई भवैया गीतों की रचना ही है और उन्हें रिकॉर्ड किया है। उनकी देखरेख में "बनिया बंधु भवैया संगीतालय" नामक एक संगीत विद्यालय चल रहा है जहाँ वह अपने शिष्यों को भवैया गीत और नृत्य सिखाती हैं। इस समय, करीब 30 छात्र उनसे भवैया सीख रहे हैं। रंजबंशी फिल्म "बिहान" और "एक फोटा पानी" में उनके अभिनय की सभी ने सराहना की है और दोनों फिल्मों को पुरस्कृत भी किया गया है। गायन के अलावा, वह आजाद हिंद संघ, माथाभंगा, कूचबिहार के सहयोग से, खासकर उत्तरी बंगाल के चाय बागान क्षेत्र में विभिन्न धर्मार्थ कार्यों से जुड़ी हुई हैं।